बिहारी

बिहारीलाल का जन्म संवत् 1603 ई. ग्वालियर में हुआ। वे जाति के माथुर चौबे (चतुर्वेदी) थे। उनके पिता का नाम केशवराय था। जब बिहारी 8 वर्ष के थे तब इनके पिता इन्हे ओरछा ले आये तथा उनका बचपन बुंदेलखंड में बीता। इनके गुरु नरहरिदास थे ।

"जन्म ग्वालियर जानिये खंड बुंदेले बाल।तरुनाई आई सुघर मथुरा बसि ससुराल॥"

जयपुर-नरेश सवाई राजा जयसिंह अपनी नयी रानी के प्रेम में डूबे रहते थे । बिहारी ने निम्नलिखित दोहा लिखकर राजा को उनका दायित्व समझाया -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।अली कली ही सौं बंध्यो, आगे कौन हवाल॥"

बिहारी जयपुर नरेश के दरबार में रहकर काव्य-रचना करने लगे ।

बिहारी की एकमात्र रचना सतसई (सप्तशती) है। यह मुक्तक काव्य है। इसमें 719 दोहे संकलित हैं। 'सतसई' में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

सतसई तीन मुख्य भागों में विभक्त हैं-

1.नीति विषयक

2.भक्ति और अध्यात्म भावपरक

3.श्रृंगारपरक

(रूपांग सौंदर्य, सौंदर्योपकरण, नायक-नायिकाभेद तथा हाव, भाव, विलास का कथन)

नायक-नायिका निरूपण मुख्त: तीन रूपों है-

1. नायक कृष्ण और नायिका राधा है। इनका चित्रण धार्मिक और दार्शनिक विचार से हुआ है। इसमें गूढ़ार्थ व्यंजना प्रधान है, और आध्यात्मिक रहस्य तथा धर्म-मर्म निहित है।

2. राधा और कृष्ण का स्पष्ट उल्लेख नहीं। आदर्श चित्र विचित्र व्यंजना के साथ प्रस्तुत किए गए हैं। इससे इसमें लौकिक वासना का विलास नहीं मिलता।

3.लोकसंभव नायक नायिका का स्पष्ट चित्र है। कल्पना कला कौशल और कवि परंपरागत आदर्शों का पुट पूर्ण रूप में प्राप्त होता है। नितांत लौकिक रूप बहुत कम है।

'सतसई' के मुक्तक दोहों को क्रमबद्ध करने के प्रयास किए गया हैं। ये दोहे समय-समय पर मुक्तक रूप में रचे गए थे। उनके दोहों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं-

1. जिनमें रस रौचिर्य और रसात्मकता है। अलंकार भावोत्कर्ष के लिए सहायक रूप में हैं।

2. जिनमें रसात्मकता की विशेषता नहीं होती। अलंकार चमत्कार , वचनचातुरी अथवा कथन-कलाकौशल ही प्रधान। दी गई है।

बिहारी वस्तुत: कृष्णोपासक थे।

" मेरी भव बाधा हरौ"

" मोर मुकुट कटि काछिनि "

बिहारी काव्य में रस , अलंकार चातुर्य चमत्कार , कथन कौशल देखने को मिलता है।

उनके दोहों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं-

1. जिनमें रस रौचिर्य और रसात्मकता है। अलंकार भावोत्कर्ष के लिए सहायक रूप में हैं।

2. जिनमें रसात्मकता की विशेषता नहीं होती। अलंकार चमत्कार , वचनचातुरी अथवा कथन-कलाकौशल ही प्रधान।

3. नीति विषयक दोहों में उक्तिऔचित्य , वचनवक्रता , चमत्कार, प्रभावोत्पादक होती है।

बिहारी में दैन्य भाव का प्राधान्य नहीं मिलती। वे प्रभु प्रार्थना दीनहीन होकर नहीं करते। । इसके विपरीत वे प्रभु इच्छा को ही सर्वोपरि मानकर उनसे विनय करते हैं।

बिहारी ने पूर्ववर्ती सिद्ध कवियों की मुक्तक रचनाओं जैसे आर्यासप्तशती, गाथासप्तशती, अमरुकशतक आदि से मूलभावों को ग्रहण कर दीर्घ भावों को संक्षिप्त रूप दिया है।